

हिंदी भाषा और व्याकरण

हमारा देश अनेक भाषाओं के समृद्ध साहित्यिक परंपराओं के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ संसार के चार भाषा-परिवारों - भारोपीय, द्रविड़, तिब्बत-बर्मी और आग्नेय की अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। इसीलिए भारत को 'बहुभाषी' देश कहते हैं। हजारों साल से साथ-साथ रहने के कारण इन भाषाओं ने एक-दूसरे को बहुत अधिक प्रभावित किया है। वास्तव में हमारी भाषाओं की ध्वनियों, शब्दों और व्याकरण व्यवस्थाओं में जो चमत्कारिक समानताएँ विकसित हो गई हैं, उन्हीं को देखकर अनेक देशी-विदेशी भाषाविज्ञानियों ने भारत को 'एक भाषिक क्षेत्र' कहा है। इसका अर्थ है कि अनेक भाषाओं के बावजूद यहाँ भाषिक और सांस्कृतिक एकता पाई जाती है। इसी कारण 'अनेकता में एकता' या 'एकता में अनेकता' को भारतीय संस्कृति और सभ्यता की प्रमुख विशेषता माना जाता है।

हिंदी का महत्त्व

हिंदी भारतीय-आर्य भाषा-परिवार की भाषा है। संस्कृत भाषा से लेकर पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि सोपानों से गुजरती हुई हिंदी आज समूचे भारत की संपर्क भाषा बन गई है। हिंदी का विकास अंतर्क्षेत्रीय भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा और अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हो रहा है। हमारे जन-जीवन, सामाजिक, सांस्कृतिक-संप्रेषण, ज्ञान-विज्ञान और सृजनात्मक साहित्य की भाषा के रूप में विकसित हिंदी हमारी ही नहीं, अपितु पूरे विश्व की शिक्षा व्यवस्थाओं में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुकी है। इसी का परिणाम है कि हिंदी अपने देश में मातृभाषा, प्रथम भाषा द्वितीय भाषा आदि रूपों में पढ़ी-पढ़ाई जा रही है और यह भारत के बाहर अनेक देशों में भी अध्ययन-अध्यापन का विषय है।

हिंदी भाषा का क्षेत्र

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सन् 1950 में हिंदी को भारत की राजभाषा होने का गौरव प्राप्त हुआ। उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, झारखंड, छत्तीसगढ़ राज्यों और दिल्ली एवं अंडमान-निकोबार संघ राज्य-क्षेत्रों में शासन और शिक्षा की भाषा हिंदी ही है।

हिंदी सार्वदेशिक भाषा हैं। बंगाल, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और पंजाब के लोगों का भी संपर्क हिंदी-भाषी क्षेत्र से होता रहता है। शासकीय दृष्टि से इन प्रदेशों की प्रदेशों की सीमाएँ तो हैं, परंतु भाषा की दृष्टि से कहीं सीमा निर्धारित करना संभव नहीं है। हिंदी और बँगला, हिंदी और गुजराती, हिंदी और पंजाबी के बीच की कोई सीमा नहीं है। इसके अतिरिक्त द्रविड़ परिवार की भाषाओं- मलयालम, कन्नड़, तेलुगु और तमिल के शब्दों और हिंदी के शब्दों में काफी समानता मिलती है। इन क्षेत्रों में भी हिंदी समझी और बोली जाती है।

हिंदी की बोलियाँ

इतने विशाल भूभाग की भाषा होने के कारण हिंदी की अनेक बोलियाँ हैं : पश्चिम में हरियाणवी, खड़ीबोली, ब्रजभाषा, बुंदेली और राजस्थानी उल्लेखनीय हैं। इनमें ब्रज भाषा, राजस्थानी और खड़ीबोली का विशेष साहित्यिक और सांस्कृतिक महत्त्व है। पूर्व में अवधी, छत्तीसगढ़, भोजपुरी और मैथिली महत्त्वपूर्ण बोलियाँ हैं। अवधी और मैथिली में भरपूर साहित्य मिलता है। उत्तर में गढ़वाली और कुमाऊँनी दो पहाड़ी बोलियाँ हैं। दक्षिण भारत में भी अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जिनकी बोली हिंदी की ही एक शाखा है जिसे 'दक्खिनी हिंदी' कहते हैं। इसमें भी साहित्य मिल जाता है। हिंदी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में इन सभी बोलियों का बहुमूल्य योगदान रहा है।

भाषा और व्याकरण

भाषा एक व्यवस्था है। जहाँ भी कोई व्यवस्था होती है, वहाँ उसके कुछ नियम होते हैं। इसीलिए हर भाषा के अपने नियम होते हैं। इन्हीं नियमों के आधार पर मातृभाषी इस व्यवस्था को अपने परिवेश से सहज रूप में सीख लेते हैं, किंतु अन्य भाषा-भाषी को इन नियमों के माध्यम से भाषा-व्यवहार सिखाया जाता है। नियमों की इस पूरी व्यवस्था को ही व्याकरण कहते हैं। व्याकरण के इन नियमों को सीखने के बाद शिक्षार्थी भाषा का शुद्ध प्रयोग करने में सक्षम हो जाता है। भाषा के सतत् प्रयोग और व्यवहार से ये व्याकरणिक नियम शिक्षार्थी स्वतः ही समझ लेता है।

भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है। वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर (सिलेबल) और अक्षर से छोटी इकाई ध्वनि अथवा वर्ण है। इन सब इकाइयों की प्रकृति, रचना और प्रयोग-विधि का ज्ञान कराना व्याकरण का काम है। मोटे तौर पर भाषिक व्यवस्था के तीन स्तर होते हैं-

1. वर्ण-व्यवस्था

2. पद-व्यवस्था

(क) शब्द स्तर पर

(ख) पद स्तर पर

3. वाक्य-व्यवस्था

व्याकरण के ज्ञान से भाषा का ठीक-ठीक और प्रभावशाली प्रयोग करना आता है। उच्चारण की प्रक्रिया समझने के बाद कोई व्यक्ति अपने उच्चारण को शिष्ट, मानक और अधिक ग्राह्य बना सकता है। शब्द स्तर पर शब्द का वर्गीकरण, शब्द का भंडार और उसकी रचना आती है, किंतु वाक्य के अंतर्गत प्रयुक्त होने पर शब्द पद का रूप ग्रहण कर लेता है। इसलिए पद-व्यवस्था में शब्द और पद दोनों स्तरों पर विवेचन करने से भाषा की प्रक्रिया स्पष्ट हो जाती है। इसके साथ ही एक भाषा को जानने वाला व्यक्ति दूसरी भाषा का व्याकरण जानकर उसे शीघ्रता और शुद्धता से सीख लेता है। इस प्रकार भाषा के मानक रूप का ज्ञान प्राप्त करने, उसका सही प्रयोग करने तथा भाषिक तत्वों का विश्लेषण करने में व्याकरण हमारी सहायता करता है।

प्रश्न-अभ्यास

1. भारत में किन-किन भाषा-परिवारों की भाषाएँ बोली जाती हैं ?
2. हिंदी किस भाषा-परिवार की भाषा है ?
3. भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है- 'अनेकता में एकता'। भाषिक आधार पर सिद्ध कीजिए।
4. हिंदी किन-किन राज्यों में प्रशासन की भाषा है?
5. हिंदी की प्रमुख बोलियों के नाम लिखिए।
6. व्याकरण किसे कहते हैं ? इसके अध्ययन से क्या लाभ हैं ?